फूल तो दो दिन बहारे जांफ़िज़ा दिखला गए

जब वतन से कर्बला में शाहे वाला आ गए
तशना लब बच्चे भी कौसर का किनारा पा गए
जिस्मे नूरानी तपिश से धूप की सौंला गए
बाग़े ज़हरा के शजर सब धूप में कुम्हला गए

फूल तो दो दिन बहारे जांफ़िज़ा दिखला गए
हसरत उन गुन्चों पर है जो बिन खिले मुरझा गए।

नैज़ए क़ातिल दिले सदपाश अकबर देखिए
लाशे क़ासिम और सुमे असपाँ मुकद्दर देखिए
दशत में बेजा पड़े हैं औनो जाफर देखिए
तीर सा शोबा बराए हल्के असग़र देखिए

फूल तो दो दिन बहारे जांफ़िज़ा दिखला गए
हसरत उन गुन्चों पर है जो बिन खिले मुरझा गए।

दुख़तरे सरवर ने कैदे शाम में रेहलत जो की
रोए यूँ अहले हरम दीवारे ज़िन्दा हिल गयी
हज़रते आबिद चले ताबूत उठाकर जिस घड़ी
बेकसी मय्यत के आगे कहती जाती थी यही

फूल तो दो दिन बहारे जांफ़िज़ा दिखला गए
हसरत उन गुन्चों पर है जो बिन खिले मुरझा गए।

कर्बला में जिस घड़ी सुग़रा का आया नामाबर
नासिराने शाहेदीं बेजाँ पड़े थे ख़ाक पर
देखकर यह वाकेया पलटा जो वो ख़स्ता जिगर
जाके सुग़रा से मदीने में कहा सर पीट कर

फूल तो दो दिन बहारे जांफ़िज़ा दिखला गए
हसरत उन गुन्चों पर है जो बिन खिले मुरझा गए।

नौहों का मजमुआ

सैय्यद विरासत अली रिज़वी 'फिक्र लखनवी'

क़ैदे ज़िन्दा से हुए आज़ाद जब ज़ैनुल इबा
और छुटी बन्दे रसन से दुख़तरे मुशकिल कुशा
कर्बला में दफ़न जाकर सब शहीदों को किया
दशते ग़ुरबत से बराबर आ रही थी यह सदा

फूल तो दो दिन बहारे जांफ़िज़ा दिखला गए
हसरत उन गुन्चों पर है जो बिन खिले मुरझा गए।

दफ़न लाशें कर चुके जिस वक्त ज़ैनुल आबदीन
साथ रांडो को लिए पहुँचे मदीने के क़रीब
मुत्तला करने गया जिस दम बशीरे दिल हज़ी
कहते थे आवाज़ सुनकर यूँ मदीने के मकीं

फूल तो दो दिन बहारे जांफ़िज़ा दिखला गए
हसरत उन गुन्चों पर है जो बिन खिले मुरझा गए।

क्या लिखूँ ऐ 'फिक्र' दशते कर्बला के वाक़ियात
ख़त्म हो सकता नहीं ग़म का फ़साना ताहयात
भूखे प्यासे उठ गए जिस रोज से वह खुशसिफात
आज तक आवाज़ देते हैं लबेशत्ते फुरात

फूल तो दो दिन बहारे जांफ़िज़ा दिखला गए
हसरत उन गुन्चों पर है जो बिन खिले मुरझा गए।